चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र





कैरो नगर में मुयीन अल्दीन नाम का एक डाकू रहा करता था। कैरो के सुल्तान ने उसे बहुत पकड़ने की सोची पर यह सफल न हुआ। उसने आखिर उसको कोतवाल नियुक्त किया। नगर के चोर उसके दबदबे में थे।

एक दिन मुयीन, बली के घर के आँगन में पड़ा सो रहा था कि उस पर एक भारी सा गट्ठर गिरा। मुयीन ने उठकर चारों ओर देखा, पर वहाँ कोई न दिखाई दिया। जो गट्ठर उस पर गिरा था, उसमें हज़ार सोने की दीनारें थीं। "मुझ पर किसे इतना प्रेम हुआ है?" सोचते हुए उसने उन दीनारों को रख लिया।

अगले दिन जब वह फिर उसी जगह सो रहा था, तो फिर उस पर एक और गट्ठर गिरा। उसमें भी हज़ार दीनारें थीं। उसके गिरानेवाले का भी कहीं पता न चला। तीसरे दिन वह सोया तो नहीं, पर उसने ऐसा दिखाया, जैसे सो रहा हो। थोड़ी देर में ऐसा लगा जैसे कोई उसकी जेब टटोल रहा हो, उसने आँखें खोलीं, और किसी का हाथ पकड़ लिया। मगर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह हाथ एक स्त्री का था।

"बात न करो, मेरे साथ आओ" उसने इशारा किया। मुयीन उसके साथ चला। जब दोनों एक निर्जन गली में गये तो मुयीन ने उससे पूछा-"मुझसे तुम्हें क्या काम है? अगर तुम मुझसे शादी करना चाहो तो मैं करने के लिए तैयार हूँ।"

क्या मुझे तुमसे अच्छा पति नहीं मिलेगा, यह समझ रहे हो? मेरी थोड़ी



सी मदद करो। काजी की लड़की और मैं बचपन से सहेली हैं। मेरी सहेली एक से प्रेम करती है। यह देखकर कि मैं उसकी ओर से बातचीत चला रही हूँ, वह मुझे अपने घर नहीं आने दे रहा है। अगर मेरी मदद न मिली, तो काजी, मेरी सहेली की किसी और से शादी करके उसकी जिन्दगी बर्बाद कर देगा। इसलिए तुम काजी के घर पहुँचने में मेरी मदद करो।" उसने कहा।

"मैं इसके लिए क्या कर सकता हूँ?" कोतवाल मुयीन ने पूछा।

"जरा ध्यान से सुनो। आज आधी रात को मैं काजी के घर के पास अकेली बैठी रहूँगी। तुम वहाँ गश्त लगाते आओ और मुझ से पूछ तलब करो। मैं यह कहूँगी कि मैं शहर काम पर आई थी और शहर के फाटक बन्द हो जाने के कारण वापस न जा सकी। तुम काजी के घर के किवाड़ खटखटाओ और उनसे यह सिफारिश करो कि वे मुझे सवेरे तक अपने घर रख लें।" उसने कहा।

क्योंकि मुयीन ने पहले ही उससे दो हजार दीनारें ली थीं, इसलिए उसकी मदद करके उसने पुण्य भी पाना चाहा।

उस दिन रात को सुरक्षा के सैनिकों को लेकर गश्त लगाता आधी रात के समय निश्चय के अनुसार, वह काजी के घर के पास आया। एक पेड़ के नीचे काली-सी कोई चीज़ बैठी दिखाई दी।

"कौन हो तुम?" मुयीन ने उससे पूछा। वह तुरन्त खड़ी होगई। सैनिकों ने पहचान लिया कि वह स्त्री थी, और कीमती पोषाक पहने हुई थी।

"हुजूर! मैं गहने वगैरह खरीदने के लिए शाम को शहर आई। खरीदने के

बाद में अपनी सहेलियों से मिलने के लिए इधर उधर घूमी। बदकिस्मती से एक भी घर में न थी। मेरे घर वापस जाने से पहले ही शहर का फाटक बन्द कर दिया गया। अब रात काटने के लिए भी कहीं कोई जगह नसीब में नहीं दीख पड़ती।" उसने कहा।

कोतवाल मुयीन ने अपने सैनिकों से कहा-"यह कोई अच्छे खानदान की स्त्री मालूम होती है। अगर रात को डाकुओ ने लूटा तो हम पर बात आयेगी। काजी का घर पास ही है। जाकर उनसे पूछें कि वे इसे रात के लिए जगह दे सकेंगे।" उसने कहा। उसने काजी को उठाकर उस युवती के बारे में कहा। "मुझे कोई एतराज नहीं है। आज रात को वह मेरी को लड़की के कमरे में सोकर सवेरे उठकर जा सकती है।" काजी ने कहा।

यह काम समाप्त करके, मुयीन खुशी-खुशी, गश्त खतम करके घर जाकर सो गया। अगले दिन सवेरे उठते ही उसे वह स्त्री याद आई। मानो किसी काम पर जा रहा हो-- वह उस तरफ गया। उसने झाँककर काजी के घर के अन्दर देखा।



मुयीन को देखते ही काज़ी उसे धमकाने लगा-" -तुमने क्या वाहियात काम किया? रात किसी चोर लड़की मेरे घर छोड़ गये। सवेरे वह छः हजार दीनारें चुराकर चलती हुई। तुम्हारा चोरों का पकड़ना तो अलग तुम चोरों की मदद कर रहे हो!" मुयीन के पैर काँपे। उसे वह स्त्री चोरी करने में चतुर मालूम हुई।

"हुजूर! माफ कीजिये। मैंने उस स्त्री का विश्वास कर लिया। सन्देह करने के लिए मेरे पास कोई कारण न था।



चोर और माल लाकर देने का काम मेरा रहा।" मुयीन ने कहा।

"चोरों का पकड़ने का काम तेरा ही तो है, मेरा थोड़ा ही है। अगर तुमने इस चोर को तीन दिन में पकड़कर न दिया तो मैं स्वयं तुम्हें मौत की सजा दूँगा।" काजी ने कहा।

सुयीन पसीना पसीना हो गया। कैरो नगर की बुरका पहननेवाली हज़ारों स्त्रियों में से, किस बुरके में वह स्त्री छुपी थी, वह

कैसे मालूम करे! उसके लिए तो यह असम्भब था ही। किसी भी मनुष्य के लिए यह सम्भव न था। मुयीन घर जाकर औधे मुँह लेट गया। तीन दिन वह घर छोड़कर नहीं गया। तीसरे दिन उठकर मुयीन काजी के घर की ओर निकला।

"मुझे चोर नहीं मिला है। मौत की सजा दीजिये।" काजी से यह कहने के लिए उसने निश्चय कर लिया था। मुयीन एक गली में से जा रहा था कि उसने सिर उठाकर देखा। दुमञ्जिले से, किसी स्त्री ने चिक हटाकर उसको ऊपर आने का सङ्केत किया। उसको मुयीन ने झट पहचान लिया। यह वही स्त्री थी।

मुयीन जल्दी जल्दी जीने पर चढ़कर ऊपर गया। उसने हँसते हुए सामने आकर कहा-"मेरे कारण आप खासी आफत में कैसे हैं।"

"मैं तुम्हारे लिए तीन दिन से सारा शहर छान रहा हूँ। क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने तो तुम्हारी मदद इसलिए की थी कि तुम अपनी सहेली की सहायता कर सकोगी, पर तुमने काजी का रुपया क्यों चुराया?" मुयीन ने उससे पूछा।

"क्यों? क्योंकि वह निरा कञ्जूस है। पैसे के बारे में तुम क्यों उलझते

हो? क्योंकि अब तुम्हारे जान पर आ पड़ी है, इसलिए मैं तुम्हें बचाने के लिए एक तरीका बताती हूँ। सुनो। वह काजी तुम पर इल्जाम लगायेगा। तुम उससे पहले उस पर इल्जाम लगाओ। उसकी रसोई में एक मर्तबान है, तुम यह दिखाओ कि सारे घर की तालाशी ले रहे हो। उस मर्तबान के पास जाओ, उसमें से कपड़े निकालो। उसमें वे ही कपड़े होंगे जो मैंने रात में पहने थे। वे खून से लथपथ होंगे। उनके खुलते ही यह काजी, जो अभी शेर बना हुआ है, भीगी बिल्ली बन जायेगा। तब वह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेगा।" उस स्त्री ने, उसके हाथ में सौ दीनारें रखते हुए कहा।

मुयीन की जान में जान आई। वह सीना तानकर काजी के घर गया। काजी ने उसको देखते ही पूछा- "अरे निकम्मे! मेरा पैसा कहाँ है? वह चोर कहाँ है?"

"मैं, यह आपसे ही पूछने आया हूँ। मैंने और मेरे सिपाहियों ने, यकीन मानिये, सारा शहर छान डाला है। उस लड़की का ठिकाना किसी को



नहीं मालूम है। उसको आपके घर में पैर रखते मैने और मेरे आदमियों ने देखा है। आपके घर से बाहर जाते हुए उसे किसी ने नहीं देखा है। वह लड़की नहीं तो उसका शव यहीं कहीं होगा। उसको खोजना कोतवाल के नाते मेरा फर्ज है।" मुयीन ने रौब से कहा।

काजी का मुँह फीका पड़ गया। थोड़ी देर तक उसके मुख से बात न निकली। आखिर उसने कहा- "जो तुम कह रहे हो वह असम्भव है। उसे किसी ने नहीं मारा है। कोई क्यों उसे मारेगा? फिर चोरी गये छः हजार दीनारों के बारे में क्या कहते हो?" उसने पूछा।

"क्या उसके लिए कोई गवाही है? आप ही तो केवल कह रहे हैं।" कोतवाल ने पूछा।

मुयीन ने सारा घर खोजा, आङ्गन खोजा। कहीं लड़की का पता न था। पता नहीं लगेगा, यह वह जानता ही था। आखिर उसने ऐसी शक बनाई, जैसे गलती की हो.... फिर रसोई घर में आकर वह एक खम्भे के सहारे खड़ा हो गया। उस कमरे के कोने में एक मर्तबान था।

अब काजी का हौसला कुछ बढ़ा। उसने कोतवाल से पूछा-"कहाँ है उस लड़की का शव! तुमने तो कहा था कि मैं ही हत्यारा हूँ। यह भी बताया कि मैंने पैसे की चोरी के बारे में झूठ कहा था। यह सब साबित क्यों नहीं करते? मुझपर ही तुम ने अपराध थोपा।" वह जोर से चिल्लाया।

मुयीन ने सिर उठाकर कहा-"खून की गन्ध... उस मर्तबान की ओर से आ रही है।" कह कर वह झट मर्तबान के पास गया और उस में हाथ रखकर, एक गट्ठर निकाला। उस गट्ठर के खोलने पर, उस में खून से लथपथ कपड़े थे। काजी पहचान गया कि वे कपड़े उस लड़की के ही थे, जो उस के घर ठहरी थी।

उसने काँपते हुए कोतवाल से कहा-"मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मैं शपथ करके कहता हूँ कि मैंने उस लड़की को नहीं मारा है। परन्तु अगर इस पोषाक के बारे में अफवाह फैली तो मेरी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिलेगी। अगर तुमने यह तहकीकात यहीं स्वतम कर दी तो मैं तुम्हारा कृतज्ञ होऊँगा।" उसने उसके हाथ पकड़ लिये। कोतवाल ने काजी के पास से एक हजार दीनारें लीं। और उन कपड़ों को काजी के सामने ही जलाकर वह अपने रास्ते चला गया।





[८]

[जादूगरनी कपालिनी ने चन्द्रवर्मा का आतिथ्य किया। अपने नौकर भैरव से उसको दावत भी खिलवाई। फिर उसने उससे कहा कि वह शंख नाम के सान्त्रिक के यहाँ से अपूर्व शक्तिवाला शंख उसे लाकर दे। उसने बताया कि अगर उसने कुछ जड़ीबूटियों का कषाय उसमें डालकर पिया तो वह हज़ार वर्ष फिर से सुखपूर्वक जी सकेगी। चन्द्रवर्मा उसकी बात मान गया, और चल पड़ा। बाद में:-]

आगे रास्ता दिखाते कालसर्प के पीछे पीछे चन्द्रवर्मा चलने लगा। सर्प चारों ओर सिर घुमाता, फुँफकारता, पेड़ों के झुरमुट में जाने लगा। पेड़ों के नीचे अनेक क्रूर जन्तु और बिषधर सर्प उसको दिखाइ दिये। परन्तु वे कालसर्प को देखते ही इधर उधर भागने लगे।

इस तरह जङ्गल में कुछ दूर जाने के बाद चन्द्रवर्मा को यकायक एक सन्देह हुआ कि कालसर्प मनुष्यों की भाषा समझ सकता है। जादूगरनी ने उससे उसी तरह बातचीत की थी, जैसे कि औरों से। उसने मनुष्यों की भाषा में ही उसे आज्ञा दी थी। परन्तु उसने उसको मनुष्यों की भाषा में बातें करता नहीं देखा था। अगर कोशिश की गई तो पता लग जायेगा कि वह बात कर सकता है कि नहीं?



चन्द्रवर्मा ने यह सोचकर जल्दी जल्दी, कालसर्प के सिर के पास जाकर पूछा-"कालसर्प, हमें इस जङ्गल को पार करने के लिए कितनी दूर और चलना होगा?"

चन्द्रवर्मा का प्रश्न सुनते ही कालसर्प तुरन्त रुक गया। उसके तीनों सिर, एक साथ भूमि पर से उठे और ठीक चन्द्रवर्मा की आँखों में देखने लगे। फिर उसने अपनी जीभ निकालकर हल्का-सा शब्द किया। वह ध्वनि, उसकी साधारण फुँफकारों की तरह न थी और उसके बाद एक के बाद एक भिन्न ध्वनि उसको सुनाई दी।

चन्द्रवर्मा को आश्चर्य हुआ। अपने तीनों सिरों को इधर उधर घुमाकर, रास्ते से हटकर, एक और दिशा की ओर वह इस तरह चला, जैसे वह चन्द्रवर्मा का आश्चर्य जान गया हो। उसने उसको पीछे आने का सङ्केत किया।

चन्द्रवर्मा ने समझा कि कालसर्प उसे कोई मेद बताने वाला था। इसलिए बिना किसी शङ्का के वह उसके पीछे चलने लगा। थोड़ी देर में वे पेड़ों के घने झुरमुट से बाहर एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ एक नाला वह रहा था।

कालसर्प नाले के पास रुका। अपने सिर से, उसने नाले के पारवाले एक विचित्र वृक्ष की ओर दिखाया। चन्द्रवर्मा के उस तरफ देखते ही विचित्र हँसी, हो हल्ला सुनाई दिया। इस विचित्र ध्वनि करनेवाले वृक्ष को देख चन्द्रवर्मा मूर्ति की तरह खड़ा हो गया। स्तब्ध।

वह एक विचित्र वृक्ष था। चालीस पचास फीट ऊँचे उस घने वृक्ष पर कई पशु पक्षियों के सिर लटक रहे थे।

वे चन्द्रवर्मा और कालसर्प को देखते ही पशुओं और पक्षियों की तरह जोर जोर से चिल्लाने लगे।

चन्द्रवर्मा ने वृक्ष की तरफ से नजर हटाकर कालसर्प की ओर घुमाई। कालसर्प उसकी ओर चुपचाप देख रहा था। चन्द्रवर्मा कुछ देर तो चुप रहा, फिर कुछ सोचकर, विचित्र वृक्ष की ओर दिखाते हुए उसने पूछा-"यह वृक्ष है? या वृक्ष के रूप में कोई भयङ्कर राक्षस है?"

कालसर्प सिर घुमाकर नाले की ओर चला। चन्द्रवर्मा उसके पीछे गया। थोड़ी देर बाद, उस विचित्र वृक्ष के पास आकर रुका। चन्द्रवर्मा के वहाँ आते ही, वृक्ष से और भयङ्कर आवाज आने लगी। चन्द्रवर्मा ने अपने को दाढ़स बन्धाया। अगर काल सर्प उसे धोखा देकर मारना भी चाहे, तो वह कुछ न कर सकता था। उस जङ्गल में घुसते ही वह आदूगरनी की मन्त्रशक्ति के आधीन हो गया था। उसका बल, और तलवार उसकी उन मन्त्र-तन्त्रों के प्रभाब से रक्षा नहीं कर सकते थे। अगर उसका भला या बुरा कुछ भी हुआ तो वह जादूगरनी कपालिनी की आज्ञा पर ही होगा।



चन्द्रवर्मा यह सोच रहा था कि कालसर्प ने उसके पास आकर, सिर उठाकर वृक्ष की ओर सङ्केत किया। चन्द्रवर्मा जान गया कि सर्प उसे वृक्ष पर चढ़ने के लिए कह रहा था। उसने तलबार निकाली, निर्भय हो पेड़ के पास गया। उसने उसके तने में तलवार भोंकी। तुरन्त इतना भयङ्कर हाहाकार मचा कि सारा जङ्गल गूँज उठा। कालसर्प भी शरीर समेट कर, भय से काँपता काँपता-सा चन्द्रवर्मा के सामने सरका। चन्द्रवर्मा की स्थिति ऐसी थी कि वह यह सब न समझ पाता था। उसने



उन पशु पक्षियों के सिरों को काटने का निश्चय कर लिया था, जो वृक्ष से चिपके चिपके भयङ्कर शब्द करके उसे डराने की कोशिश कर रहे थे।

कालसर्प पेड़ के तने के पास गया। उसको अपने शरीर से लपेटकर उसने एक बार टहनियों की ओर देखा। वह क्या कहना चाह रहा था, यह जानकर चन्द्रवर्मा तुरन्त पेड़ पर चढ़ने लगा। वृक्ष से लटके पशु और पक्षी निरन्तर शोर करते जाते थे। चन्द्रवर्मा निर्भय हो टहनियों पर गया। उसने अपनी तलवार से एक ऐसी चीज़ को काट डाला, जिसका सिर शेर के सिर की तरह था, और जो शोर करके उसे डरा रहा था। वह तुरन्त नीचे गिर गया। चन्द्रवर्मा के आश्चर्य की सीमा न थी। भूमि पर गिरकर वह शेर का सिर एकदम एक फल में बदल गया।

चन्द्रवर्मा के जल्दी जल्दी पेड़ से उतरते ही कालसर्प उस फल को मुख में रखकर उसकी ओर मुड़ा। चन्द्रवर्मा ने उस फल को लेकर, काट कर देखा। उसी समय उसको ऐसा लगा जैसे कालसर्प जोर से हँस रहा हो। चन्द्रवर्मा ने उनकी ओर देखा।

"चन्द्रवर्मा! अब पता लगा इस वृक्ष के विचित्र सिरों के बारे में?" कालसर्प ने पूछा।

इस प्रश्न से चन्द्रवर्मा को सब कुछ मालूम हो गया। जब वह फल खा ही रहा था, तभी उसको कालसर्प की बातें समझ में आने लगी थीं। तब तक वह जो ध्वनि कर रहा था वह एक फुँफकार की तरह ही थी।

"उस फल को खाने से तुझे, पशु और पक्षियों की भाषा समझ में आने लगी।

मान्त्रिक शंख के पास पहुँचने के लिए, उसके अपूर्व शक्तिवाले शंख को लाने के लिए यह ज्ञान तुम्हारी कितनी ही मदद करेगा। तुम्हें इस तरह काम करना होगा कि उसके नौकर, अग्नि पक्षी से तुझे कोई खतरा न हो। अब चूंकि तुम सब प्राणियों की भाषा समझ सकोगे, इसलिए तुम्हें अपने प्रयत्न में सफलता मिल सकती है।" कालसर्प ने कहा।



चन्द्रवर्मा को बड़ी खुशी हुई। उसने कृतज्ञता भरी आँखों से कालसर्प की ओर देखते हुए कहा-"कालसर्प, तुमने मेरी बड़ी मदद की। तुम इसके बदले में मुझ से क्या लेना चाहोगे?"

कालसर्प ने सिर नीचा करके कहा-"मैं जो मदद चाहता हूँ, ऐसी खास बड़ी नहीं है। फिर भी मुझे तब तक प्रतीक्षा करनी होगी, जब तक तुम शंख से अपूर्व शक्तिवाला शंख नहीं ले आते। इससे पहले मेरा कुछ माँगना ठीक नहीं है।"

कालसर्प के यह कहते ही, चन्द्रवर्मा ने तभी जानना चाहा कि वह क्या सहायता चाहता था। उसने सन्देह भरी दृष्टि से कालसर्प की तरफ देखकर पूछा-"कालसर्प ! क्या तुम सचमुच सर्प हो? नहीं तो मनुष्य हो?"

"एक समय था, जब मैं सर्प नहीं था। मनुष्य ही था। शंख का शिष्य था। उसके भेजने पर मैं कपालिनी की हानि करने आया और पकड़ा गया और साँप बना दिया गया। तब से वह मुझसे अपने नौकर का काम ले रही है। तुम अपने प्रयत्न में सफल होकर जब आओगे, तब मेरा इस तुच्छ जीवन से उद्धार कर सकोगे।" कालसर्प ने विनयपूर्वक कहा।



"इसके लिए तुझे मेरे लौटने तक प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है। अभी लौटकर कपालिनी के पास चलें। वह मेरी बात न ठुकरायेगी। मैं उससे कहूँगा कि वह फिर तुझे मनुष्य बना दे।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

इसके लिए कालसर्प नहीं माना। "बर्मा, तुम कपालिनी को पूरी तरह नहीं जानते। बहुत शक्की है वह। वह यह सभी शक कर सकती है कि हम दोनों मिलकर उसका कुछ बुरा करने जा रहे हैं। अगर यह हुआ तो मेरे साथ तेरा भी बुरा होगा। इतने दिनों से यह सर्प की जिन्दगी जी ही रहा हूँ, थोड़े दिन और काट लूँगा। मैं प्रतीक्षा करूँगा।" कालसर्प ने कहा।

चन्द्रवर्मा को कालसर्प की बातों में सच्चाई दीख पड़ी। जादूगर और जादूगरनियों पर विश्वास नहीं करना चाहिये। यह अनुमान करना कठिन है कि कब किन पर उनको कैसा सन्देह होता है। चन्द्रवर्मा यह सोचकर, पेड़ के पास से आगे बढ़ा। कालसर्प पहले की तरह उसे रास्ता दिखाने लगा।

ठीक दुपहर के समय वे घने जङ्गल से पार हो सके। सामने बड़े बड़े पहाड़ और घाटियाँ दिखाई दीं, वहाँ भी पेड़ पौधे तो थे, पर जङ्गल बहुत धना न था। ठीक ठीक रास्ता न था।

"चन्द्रवर्मा! मैं अब वापस चला जाऊँगा। कपालिनी की आज्ञा से मैंने तुझे इस जङ्गल से पार करा दिया है। अब आगे तुझे अकेले ही जाना होगा। उन पहाड़-घाटियों में तुझे कदम कदम पर शायद खतरों का सामना करना होगा। अगर तुमने हिम्मत न हारी तो, पशु और

पक्षियों की भाषा के ज्ञान के कारण सब विपत्तियाँ टल सकेंगी। सदा हिम्मत रखो।" कालसर्प ने कहा।

उसके बाद, चन्द्रवर्मा से बिदाई लेकर, कालसर्प, फुँफकारता, उस रास्ते पर वापस जाने लगा, जिस रास्ते आया था। चन्द्रवर्मा उसकी ओर तब तक देखता रहा, जब तक वह आँखों से ओझल न हो गया, फिर चन्द्रवर्मा लम्बी साँस छोड़कर, आगे चलने लगा।

रास्ता, छोटे बड़े पत्थरों के और काँटों के कारण ऊबड़-खाबड़ था। कहीं कहीं गगनचुम्बी वृक्ष थे। वहाँ के पशु, जो शोर कर रहे थे, वह चन्द्रवर्मा आसानी से सुन सकता था। फर्क यह था कि वह उनकी आवाज में, उनकी भाषा समझ सकता था। वे आपस से एक दूसरे से कह रहे थे कि कोई नया प्राणी उनके रहने की जगह आया था।

सूर्य के पश्चिम दिशा के ओर जाने से पहले, चन्द्रवर्मा ठीक उत्तर की ओर चलता रहा। तब उसे थकान के कारण बड़ी भूख लगने लगी। वह एक पेड़ की साया में, तने से



लगकर बैठ गया, और चारों तरफ देखने लगा। जहाँ तक नजर जाती थी, वहाँ तक कहीं फल के पेड़ नहीं थे। अगर वह कन्द-मूल भी खाने को तैयार था, तो वहाँ सिवाय काँटों और पत्थरों के कुछ न था। सुनसान बियावान जगह थी।

"फिजूल समय बिताने से कोई फायदा नहीं। अगर थोड़ी दूर और आगे गया.... तो शायद फलों के वृक्ष मिलें।" यह सोच, चन्द्रवर्मा वहाँ से उठकर चल पड़ा। थोड़ी दूर जाकर वह एक पत्थर का चक्कर लगाकर आगे गया था कि फलों से

लदे कई वृक्ष उसे दिखाई दिये। चन्द्रवर्मा बहुत आनन्दित हुआ। वह छोटे छोटे, पत्थरों और काँटों से बचता आगे बढ़ा। दो तीन मिनट बाद, उसे ऐसा लगा, जैसे गरम लूह चल रही हो। चन्द्रवर्मा चकित हो, थोड़ी दूर और गया। जहाँ यह खड़ा था,

उससे कुछ दूर नीचे, एक नदी कल कल करती बह रही थी, वह गरम भाप-सी उगल रही थी।

चन्द्रवर्मा उस विचित्र नदी को देखकर आश्चर्य करने लगा। वह जान गया....कि वह नदी किसी ज्यालामुखी पर्वत से आ रही थी.... उसके कारण ही लूह चल रही थी। अगर भूख के कारण, मौत से उसे बचना था, तो हर हालत में उसे वह नदी पार करनी पड़ती। फल से लदे वृक्ष सब नदी के पार ही थे। इस तरफ़ पत्थर ही पत्थर थे।

चन्द्रवर्मा अभी सोच रहा था कि क्या किया जाय.... कि एक बड़ा साँप, समतल प्रदेश से, ताड़ के पेड़ की तरह ऊपर उठा और इस तरह झुका कि उसका सिर नदी के परले पार जाकर गिरा। फिर वह आगे सरकता पूँछ को धीमे धीमे हिलाने लगा।

उसी समय चार पाँच बन्दर, किच किच करते, पेड़ पर से उतरकर साँप के ऊपर से नदी पार चले गये।

चन्द्रवर्मा जान गया कि अगर उसे उस पार जाना था तो उसे भी साहस करके साँप के ऊपर से भागना होगा और वह प्रयत्न भी साँप के उस पार जाने से पहले ही करना होगा। यह सोच चन्द्रवर्मा वहाँ से हिला और एक छलाङ्ग में साँप के पास गया और उस पर से परली तरफ भागने लगा।

(अभी है)





[२]

रशीद का काफला, जिसने उसके भाई और ऊँटों को पकड़ रखा था, तीन दिन में मक्का पहुँचनेवाला था कि कनाना उस काफले से जा मिला। वह मुँह पर पगड़ी डालकर तीन दिन उसके साथ चलता रहा, और जो कुछ मालूम किया जा सकता था, उसने मालूम कर लिया।

रशीद का काफला, एक दिन दुपहर को मक्का पहुँचा। उस समय स्खलीफा उमर किसी और आदमी से बातचीत करता मुसलमानों के लिए सब से अधिक पवित्र स्थान, कावा के दरवाजे के पास खड़ा था। रशीद के ऊँटों में माल ढोनेवाले कई ऊँट पीछे रह गये थे। खाली ऊँट काबा के पास आ गये थे। उन सब के आगे सफेद ऊँट शान से चला आ रहा था। वह मरुभूमि भयङ्कर" का था। उस पर कनाना का बड़ा भाई था।

जब ऊँट एक एक करके पैर मोड़कर बैठ रहे थे, तब कनाना वहाँ पहुँचा। उस लड़के ने, जो कनाना को रास्ता दिखाता आया था, कहा-"वे हैं खलीफा।" उसने खलीफा को दिखाया।

कनाना ने अपना मुहँ ढ़के रखा। खलीफा के पास जाकर, सलाम करके, कहा-"खलीफा उमर के लिए पत्र?" उसने मरते हुए सैनिक द्वारा दिया हुआ पत्र उसे दिया। अपनी पगड़ी हटाकर अपना मुँह खलीफा को दिखाया।

"तुम्हारी तो अभी दाढ़ी मूँछ भी नहीं आई है। क्या तुम जानते हो इस चिठ्ठी में क्या लिखा है?" खलीफा ने पूछा।



सैनिक ने जो बात उसे बतायी थी, उसने उसे खलीफा से कह दी।

"जो इतनी मुख्य चिट्ठी छाया हो उसका मक्का की गलियों में अकेला घूमना अच्छा नहीं!" खलीफा ने कहा।

"हुजूर, गौर करें कि मैं इस चिट्ठी को हौर पहाड़ से अकेला ही लाया हूँ।" कनाना ने कहा।

जब खलीफा को मालूम हुआ कि कनाना को कैसे वह चिट्ठी मिली थी तो उसने उससे कहा-"तुम बहुत साहसी हो। जबतक में वापस आऊँ तुम मेरे घर जाकर रहो।" उसने एक नीग्रो गुलाम के साथ उसको अपने घर भेज दिया।

गुलाम के साथ जाते कनाना ने सोचा-"मेरी परीक्षा खतम हो गई है। खलीफा को मैंने चिट्ठी पहुँचा दी है। खलीफा ने मुझे साहसी भी बताया है। अगर मैंने सफेद ऊँट को और भाई को छुड़वाकर पिता की प्रशंसा पा ली, मुझे और क्या चाहिये, खलीफा को मुझे फिर देखने की क्या जरूरत है? वह गुलाम को चकमा देकर चला जाना ही चाहता था कि वे खलीफा के घर पहुँचे। एक बड़े फाटक में से वे सङ्गमरमर के फर्शवाले आङ्गन में घुसे। उसे पारकर उन्होंने खलीफा के घर में पैर रखा। गुलाम, कनाना को एक जगह बिठाकर चला गया।

थोड़ी देर बाद खलीफा वहाँ आया। कनाना ने जमीन पर सिर लगाकर उसको सलाम किया। खलीफा ने बैठते हुए कहा-"बेटा, तुमने एक ऐसा काम किया है, जो कई बड़े बड़े साहसी नहीं कर पाते हैं। माँगो, क्या इनाम चाहते हो?"

"मुझे खलीफा के आशीर्वाद चाहिये।" कनाना ने कहा।

"उनकी तो कमी न होगी। और क्या चाहते हो? ऊँट, भेड़, सोना?" खलीफा ने पूछा।

"मैं उनका क्या करूँगा? मुझे आशीर्वाद देकर कृपया मुझे भेज दीजिये।" कनाना ने कहा।

"तुमने तो मुझसे कुछ नहीं माँगा। मैं तुमसे कुछ माँगना चाहता हूँ। अल्लाह के लिए युद्ध करनेवाले सेनापतियों में, खालीद सब से अच्छा है। वह थोड़े दिनों में बसरा पहुँचकर वहाँ से तीस हजार सैनिकों को लेकर फारस की ओर जायेगा। फारस जाने के बदले, वह सीरिया जाये; यह में एक चिट्ठी में लिखकर कुछ सैनिकों के साथ भेज रहा हूँ। यहाँ से बसरा तक तीन हफ्ताहों का सफर है। मैं इस बीच यह अपील कर रहा हूँ कि धर्म पर अभिमान करनेवाले उसके नेतृत्व में लड़ें। मेरी चिट्ठी ले जानेवाले सैनिकों के साथ तुम भी जाओ और तुम उसको वास्तविक स्थिति बताओ।"

"रास्ता बहुत मुश्किल है। इस मौसम में बसरा तक, रास्ते में एक



बूँद भी पानी न मिलेगा। चोर डाकुओं का भय भी अधिक है।" कनाना ने कहा।

"तुम्हें कोई कष्ट न हो, किसी का भय न हो, इसकी मैं व्यवस्था करूँगा।" खलीफा ने कहा।.

"मैं अपनी बात नहीं कह रहा हूँ। मैं आपके सैनिकों की बात कह रहा हूँ। जो इस चिट्ठी लानेवाले सैनिकों की गति हुई थी, वह गति इन सैनिकों की भी होगी। मैं कष्टों और आपत्तियों से डरनेवाला नहीं हूँ। वह चिट्ठी मुझे दीजिये। मैं वह खुद खालीद तक पहुँचाऊँगा।"

कनाना ने कहा। "क्या बिना साथी को लिए ही जाओगे?" स्खलीफा ने पूछा।

"साथी भी ऐसे होंगे जैसी वह तलवार, जो उठाई न जा सके।" कनाना ने कहा।

उसकी बातें सुनकर खलीफा को आश्चर्य हुआ। "अच्छा, तो मैं तुम्हें चिट्ठी दूँगा। परन्तु उसकी नकल, मैं अपने सैनिकों द्वारा एक और रास्ते भेजूँगा। कब जाओगे तुम?" खलीफा ने पूछा।

"इसी समय" कनाना ने कहा।

"शाबाश, तुम्हें कितने ऊँट चाहिए? कितने नौकर चाहिए?" खलीफा ने पूछा।

"यहाँ आते आते, मुझे रास्ते में एक काफिला मिला। उस काफिले का पहला ऊँट, सफेद कँट मुझे बहुत जँचा। उसे और उसे चलानेवाले को मुझे दिलवाइये। मेरे साथ चलने के लिए एक और ऊँट और दो हप्ताह के लिए काफ़ी रसद दिलवाइये।" कनाना ने कहा।

"सफर बीस दिन से अधिक का होगा।" खलीफा ने कहा।

"जितना भार कम होगा उतनी तेजी से ऊँट चलेगा। और किसी के लिए यह सफ़र तीन सप्ताह का हो सकता है, मेरे



लिए दो सप्ताह का ही है।" कनाना ने कहा।

खलीफा ने अपने नौकरों को बुलाकर कहा-"आज जो काफला आया है, उसमें एक सफेद ऊँट है। उसको, उसके हाँकनेवाले के साथ ले आओ। मेरे काले ऊँट को सफर के लिए तैयार करो।"

जल्दी ही सफर की तैयारियाँ खतम हो गई। कनाना खलीफा के घर से बाहर निकलकर उसके लिए लाये गये सफेद ऊँट पर चढ़ गया। उसका बड़ा भाई काले ऊँट को लिए खड़ा था। क्योंकि कनाना का मुँह ढका हुआ था इसलिए बड़ा भाई अपने भाई को पहचान न सका। उसने इस तरह देखा जैसे पूछ रहा हो-"कहाँ जाना है?" कनाना ने कहा-"तयाफ?"

तयाफ मक्का से कुछ दूर पूर्व में एक शहर था। कनाना का उस शहर का नाम बताना पासवाले कुछ आदमियों ने सुना। वे रशीद के आदमी थे। यह जानकर कि खलीफा ने सफेद ऊँट माँगा है, उसे जैसे भी हो, वापस लेने का निश्चय करके, उसने अपने आदमियों को यह जानने के





लिए भेजा कि वह किस ओर जा रहा था। उन्होंने रशीद की इच्छा के अनुसार जानकारी लाकर दी।

*   *   *   *

जल्दी ही दो ऊँट, मक्का शहर से पूर्व की ओर निकले। वे मक्का के फाटक से निकले थे कि पाँच घुड़सवार उसी दिशा की ओर निकले।

सफेद ऊँट पर सवार कनाना के मन में भय था। कहीं कोई न दिखाई देता था। अन्धेरा था। उसने पीछे मुड़कर देखा कि उसका कोई पीछा कर रहा था। उसने अपने भाई की ओर मुड़कर कहा-"क्यों चलते हो? वह काला ऊँट तेरे लिये ही आ रहा है। उस पर चढ़ो।"

"मालिक, सफेद ऊँट मेरे बगैर नहीं चलेगा। वह मुझसे ही हिला हुआ है।" कनाना के भाई ने कहा।

"यूँ ही बात न करो, जो मैं कहता हूँ वह करो। उस काले ऊँट से अधिक तेज़ चलनेवाला ऊँट मक्का में नहीं है। वह खलीफा का अपना ऊँट है। उस पर चढ़कर, अगर तुम मेरे साथ चल सके तो हम रशीद की आँखों में धूल झोंक सकते हैं।" कनाना ने कहा।

रशीद का नाम मालिक के मुँह सुन, कनाना के भाई को आश्चर्य तो हुआ, मगर वह तुरन्त काले ऊँट पर सवार हो गया।

कनाना के कहते ही सफेद ऊँट चल पड़ा। उसके बाद काला ऊँट अपने आप चला। जब ऊँट रुके थे, तभी दूरी पर घुड़ सवार रुके। उनका क्या मतलब था, यह साफ हो गया।

कनाना अपने सफेद ऊँट को तेजी से चलाने लगा। घुड़सवारों ने भी अपनी

रफ्तार तेज की। कनाना अपने ऊँट की गति तेज़ करता गया। काला ऊँट उसके साथ चलता गया। उसके साथ घुड़सवार भी अपने घोड़ों को और तेजी से भगाने लगे।

कनाना ने सफेद ऊँट को खूब जोर से भगाया। काला ऊँट थोड़ा पीछे रह गया। घोड़े और भी पीछे रह गये। परन्तु ऊँटों की गति कम न हुई। वह पड़ाव आया, जहाँ मक्का से आते लोग ठहरा करते थे। पर ऊँट वहाँ न रुके। तयाफ से आता एक काफिला मिला। वह मक्का की ओर चला गया।

उसके आँखों से ओझल होते ही कनाना ने अपने ऊँट को उत्तर पूर्व की ओर मोड़ा। उसके भाई को अचरज हुआ। मक्का से फारस जाने के रास्ते का दूसरा पड़ाव भी आया। पर कनाना ने अपना ऊँट वहाँ भी न रोका।

काला ऊँट पीछे रह गया था। कनाना का भाई उसे मारकर आगे लाया। उसने कहा-"मालिक, हम तयाफ की ओर नहीं जा रहे हैं?"

"नहीं...." कनाना ने कहा।



"मालिक, वह ऊँट मर जायेगा।" कनाना के भाई ने कहा।

"एक रात में नहीं मरेगा। पहले तुम अपने प्राणों की रक्षा करो।" कनाना ने कहा। सफेद ऊँट की गति कम न हुई। खलीफा का काला ऊँट पीछे रहता गया।

सूर्योदय के समय कनाना ने सफेद ऊँट को रोका। थोड़ी देर में काला ऊँट भी आ मिला। भाई के पहुँचने पर कनाना सवेरे की नमाज पढ़ रहा था। फिर दोनों ने भोजन किया। कनाना के भाई ने बहुत कोशिश की कि खलीफा के दूत का मुँह देखे, परन्तु पगड़ी के ओट में उसे मुँह न दिखाई दिया।

वे दिन भर सोकर शाम को उठे। " मालिक, आज रात उस ऊँट को उतनी तेज़ न चलाइये। उसे चार सप्ताह से आराम ही नहीं मिला है। उसे तङ्ग करने की अपेक्षा, अगर आप मुझे मार भी दें तो में सन्तुष्ट होऊँगा।" कनाना के भाई ने कहा।

"उसे जैसे चलाना है, तुम ही चलाओ। मैं काले ऊँट पर चलूँगा। इसके बाद, तुम अपने रास्ते जाओ, मैं अपने रास्ते। तेरा रास्ता मैं ही बताता हूँ। तुम सीधे उत्तर की ओर जाओ। तुम्हें दस दिन जाना होगा।" कमाना ने कहा।

"मुझे क्या करना है?" भाई ने पूछा।

"बेनीसाद टोली से मिलकर, 'मरुभूमि भयङ्कर' से कहो कि कनाना ने अपना वचन पूरा कर दिया है।" कहते हुए कनाना ने काले ऊँट की नकेल खींची।

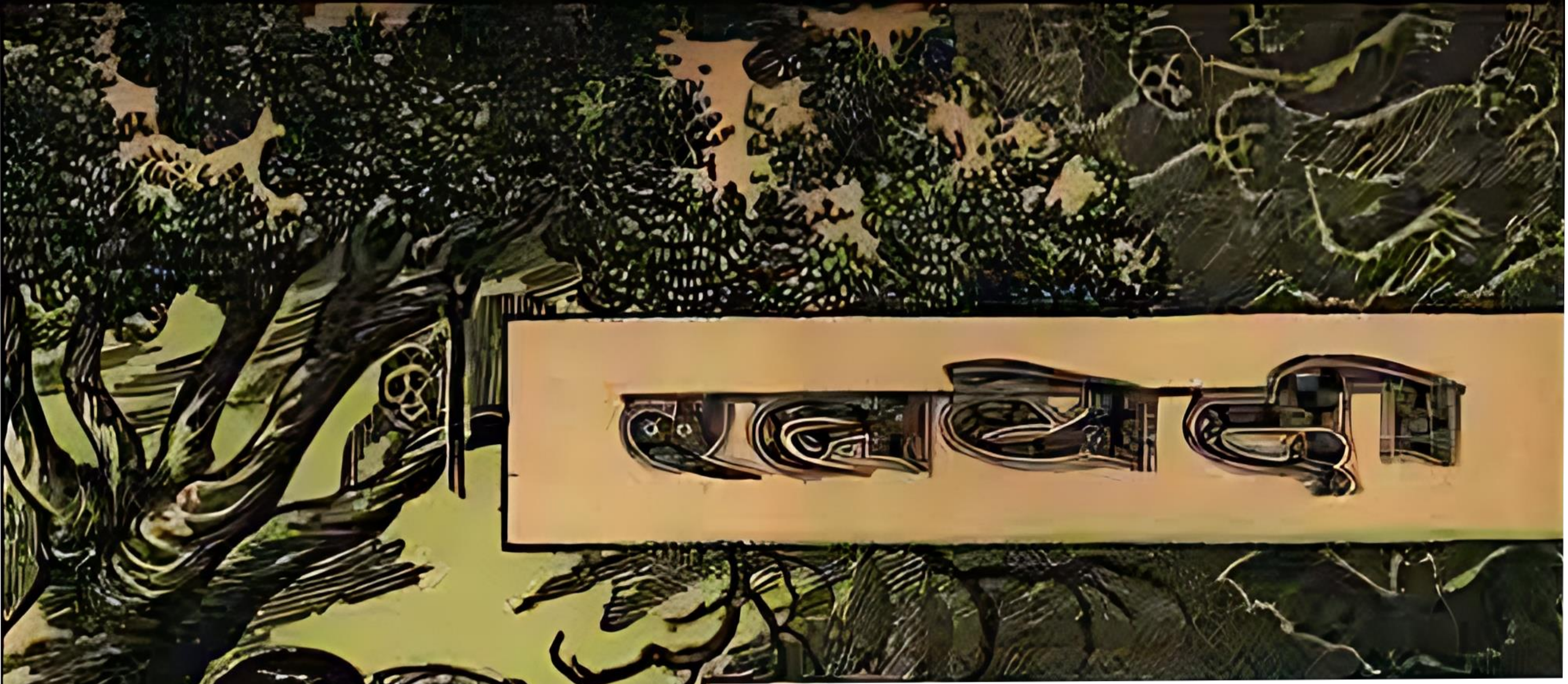
"आप कौन हैं?" कनाना का भाई चिल्लाया।

कनाना पीछे मुड़ा। मुँह पर का कपड़ा हटाकर उसने कहा-"मैं तेरा भाई हूँ, कनाना।" वह तेजी से फिर आगे भाग गया।

"कनाना, भाई...." बड़ा भाई चिल्लाया। परन्तु बने अन्धकार में काला ऊँट गुम-सा हो गया। "मेरे भाई को, बिना जरूरी मदद के और हथियार के इस तरह अकेला नहीं जाना चाहिये।" सोचकर उसने अपने सफेद ऊँट को जोर से मारा। उसको मारता देख, सफेद ऊँट अकड़ गया। फिर भी उसने एक घण्टे तक भाई की खोज की। पर वह न मिला। कनाना का भाई दुखी हो अपने ऊँट को उत्तर की ओर ले गया।

(अभी और है)







विक्रमार्क जिद का पक्का था। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ से शब उतार कर, कन्धे पर डाल चुपचाच श्मशान की ओर जाने लगा। तब शक में स्थित बेताल ने कहा-"राजा! तुम सब तरह से समर्थ हो। सब तुम जैसे नहीं होते। कई, जो कुछ बातों में बहुत तेज होते हैं, कई और बातों में बिल्कुल निकम्मे होते हैं। यह दिखाने के लिए मैं तुम्हें रत्नवेदी की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यह कहानी सुनानी शुरू की।

कुछ समय पहले, होयसाल राज्य में एक चिरकीर्ति नाम का व्यक्ति रहा करता था। वह सब प्रकार के हीरे खरीदता और उनको चमकाकर जौहरियों को बेचकर अपनी आजीविका चलाता। हीरे खरीदकर



उनको चमकाना कोई बहुत फायदेमन्द व्यापार नहीं है। जो चार पाँच हीरों से लाभ हो सकता था वह एक में जा भी सकता था। क्योंकि हीरे का उस प्रारम्भिक दशा में मूल्य आँकना आसान काम नहीं है।

चिरकीर्ति के एक लड़का था। नाम था, रत्नवेदी। कहीं ऐसा न हो कि उस आजीविका के अवलम्बन से, लड़का भी उसके जैसा रह जाय, चिरकीर्ति ने रत्नवेदी को पढ़ाया-लिखाया।

तब रत्नवेदी की उम्र बारह वर्ष की थी। चिरकीर्ति उसको अपने साथ जोहरी के पास ले गया। क्योंकि यह जौहरी कहीं से अपूर्व हीरा लाया था इसलिए उसके घर भीड़ थी।

पिता और पुत्र भीड़ को चीरते अन्दर गये। जौहरी ने चिरकीर्ति से कहा-"क्या यह हीरा देखा है? इसे पश्चिम के पहाड़ में मैंने स्वयं चुना है। बहुत मेहनत भी न की। अब इसको लाख मुहरें देकर लोग माँग रहे हैं।"

उन दोनों में व्यापार के बारे में कुछ बातचीत हुई। रत्नवेदी उस हीरे को ही देखता रहा। उसको हाथ में रखकर, उसने उसके सौन्दर्य, भार, चमक आदि की जाँच पड़ताल की। फिर पिता पुत्र वापस घर चले आये।

इस घटना के बाद रत्नवेदी को रत्न खोजने की सूझी। अगर उसे भी एक वैसा हीरा मिल गया, तो तीन पीढ़ी तक गरीबी पास न फटकेगी। परन्तु उसने पिता से कुछ न कहा।

दो वर्ष और बीत गये। चिरकीर्ति बीमार पड़ा। जो कुछ जमा था, वह उसकी चिकित्सा पर खर्च हो गया, तो भी उसकी बीमारी ठीक न हुई।

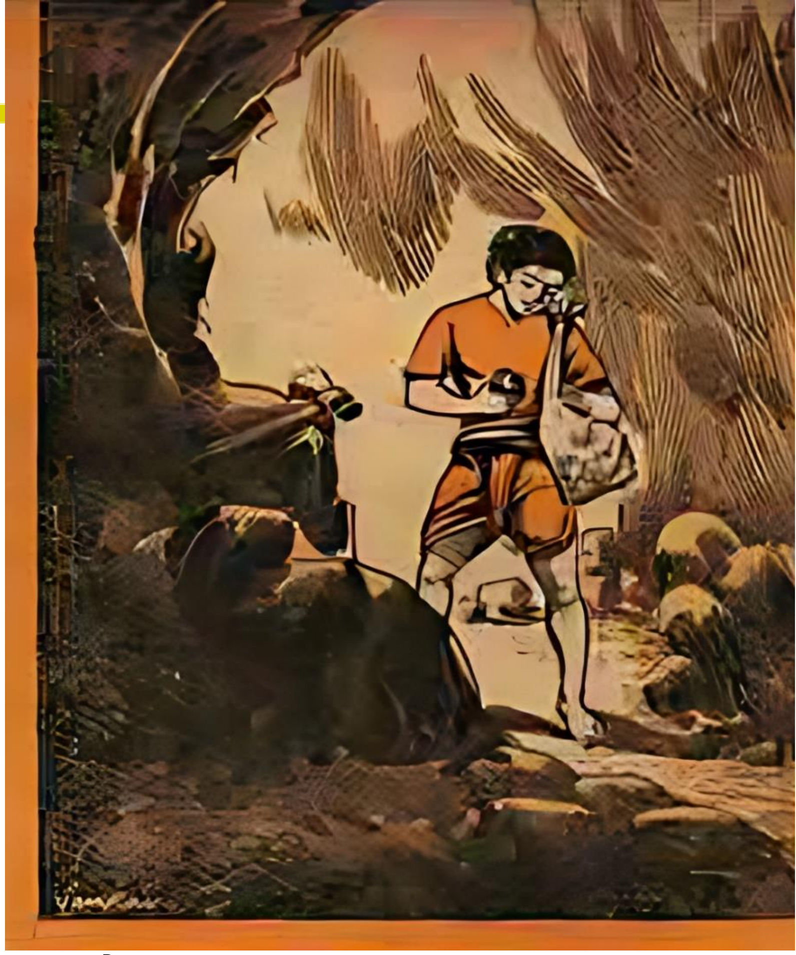
पिता के मरते ही रत्नवेदी पर अपने और अपनी माता के भरण-पोषण की जिम्मेवारी पड़ी। जब माँ ने पूछा-"बेटा, क्या करोगे?" तो उसने कहा-"माँ, मैं भी हीरों को चमकाना सीखूँगा। जो कुछ मिलेगा, गुजारा कर लेंगे।"

माँ मान गई। रत्नवेदी एक गुरु के यहाँ हीरे चमकाने के काम पर लग गया। उसे मालूम हो गया कि हीरे किन पत्थरों में मिल सकते थे।

और दो वर्ष के बाद, उसने अपने गुरु से कहा-"मैं अपने मामा के घर जाकर दो सप्ताह में वापस आ जाऊँगा।" उसने उससे अवकाश ले लिया। माँ से भी यह कहकर वह मामा के घर गया। उसका घर पश्चिमी पहाड़ की तलहटी में था।

वहाँ पहुँचने के अगले दिन ही, एक थैले में, छेनी, हथौड़ा आदि रखकर थोड़ा बासी भात ले, मामा से यह कहकर-"पहाड़ में जाकर हीरे ढूँढूँगा।" वह घर से निकला।

"पागल! सोलह साल भी पूरे नहीं हुये हैं, यह क्या हीरे ढूँढ़ेगा?" मामा यह सोच हँसा।



रत्नवेदी, उस दिन बिना आराम किये पहाड़ में घूमता रहा। जिस जिस पत्थर में हीरे के होने की सम्भावना थी, उसने उसको काटकर अपने थैले में रख लिया। दिन भर उसने पत्थर जमा किये। पर थैला आधा भी न भरा। इसलिए उस दिन आधा भात खाकर वहीं पहाड़ पर रात को सो गया। अगले दिन शाम को थैला भर गया। उस दिन वह मामा के घर वापस गया।

उसके लाये हुये पत्थरों को देखकर उसके मामा ने पूछा-"क्या इन पत्थरों मैं भी कोई हीरे होंगे?"

कम से कम तीन सौ मुहरों की कीमत के हीरे होंगे।" रत्नवेदी ने कहा।

उसका मामा कम्बल बुनकर, उन्हें बेचकर, जिन्दगी बसर किया करता था। साल भर कम्बल बनाकर बेचने पर तीन सौ मुहरों का फायदा न होता था। इसलिए भानजे की बात सुनकर उसे अचरज हुआ। रत्नवेदी की यह बात गलत थी कि उनमें तीन सौ मुहरोंवाले हीरे थे, पर इधर उधर के कई हीरे थे, जिनका दाम डेढ़ सौ मुहरें था।

रत्नवेदी तो गरीब था ही, उसने माँ को सौ मुहरें देकर आवश्यक चीजें खरीदने के लिए कहा।

उसे यह भी हौसला हुआ कि किसी न किसी दिन वह कीमती हीरा भी ढूँढ निकालेगा। इसलिए अगले साल वह मामा के घर गया। तीन चार दिन की रसद लेकर, वह पहाड़ गया। जिस किसी पत्थर में हीरे के होने की गुञ्जाईश थी, उसको काटकर, उसने अपने बोरे में रख लिया। उसके भरने पर वह वापस गया। उसने उन पत्थरों को गुरु के



सामने डालकर पूछा-"क्या इनमें किसी में में हीरा है?"

रत्नवेदी के गुरु ने एक एक पत्थर को जाँचा, सिर फेरकर एक कोने में फेंक दिया। रत्नवेदी निरुत्साहित नहीं हुआ क्योंकि उसे भी उन पत्थरों के बारे में कोई विश्वास न था। एक पत्थर के बारे में ही उसे कुछ उम्मीद थी। उस पत्थर के बारे में गुरु क्या कहेगा, यह जानने के लिए यह उत्सुक था।

गुरु ने आखिर उस पत्थर को उठाया। उसे काफी देर तक देखा। फिर उसे भी कोने में फेंककर कहा-"तेरी सारी मेहनत बेकार है। किसी भी पत्थर में कोई हीरा नहीं है।"

रत्नवेदी को सन्देह हुआ कि गुरु ने उससे झूठ कहा है। उस दिन वह चुपचाप उस कमरे में गया जहाँ हीरों पर चमक लगाई जाती थी। दीये की रोशनी में अपने लाये हुए पत्थर ढूँढे। वहाँ वे सब पत्थर तो थे, पर गुरु ने जो अन्त में पत्थर देखा था, वह न था। उसका सन्देह और भी पक्का हो गया।

बगलवाले कमरे की अलमारी में चमकाये हुए हीरे रखे हुए थे। रत्नवेदी ने उस





कमरे में जाकर आधे चमकाये हुए हीरे के पत्थर को देखा। उन पत्थरों में वह हीरा इस तरह चमक रहा था जैसे बादलों में से चन्द्रमा निकल रहा हो।

वह जान गया कि गुरु ने उसे धोखा दिया था। रत्नवेदी ने उस पत्थर को लेकर अपनी जेब में रख लिया। "तू चोर है; मैं तेरे नौचे काम नहीं करूँगा।" यह सोच, एक छोटे पत्थर को अलमारी में रख वह घर चला गया।

पूरी तरह चमकाने के बाद उस हीरे को देखकर रत्नवेदी बहुत खुश हुआ। सम्भव है कि उसकी कीमत एक लाख मुहरें न हों पर आसानी से उसकी कीमत पचास हजार मुहरें हो सकती थी। उससे उसकी गरीबी हमेशा के लिए हट सकती थी। रत्नवेदी सपने देखने लगा कि उस हीरे को अच्छे दाम पर बेचकर वह घर, बाग, जमीन जायदाद खरीदेगा।

परन्तु उतने कीमती हीरे को बेचना सुगम न था। लोगों को मालूम होना चाहिये था कि उसके पास उतना कीमती हीरा था। अगर एक दो को ही दिखाया तो उसको उसकी पूरी कीमत न मिल सकेगी। इसलिए उसने उसे किसी को न दिखाया। अच्छे मौके की प्रतीक्षा करने लगा।

उसको मौका एक दो महीनों में मिल गया। शहर में एक बड़ा मेला लगा। उस मेले में भिन्न भिन्न देशों से भिन्न भिन्न व्यापारी तरह तरह की चीजें लेकर आये। उनमें बीस से अधिक जौहरी ही थे। रत्नवेदी ने सोचा कि उस मेले में उसके हीरे के लिए ठीक कीमत निश्चित हो सकेगी।

वह मेले में, जौहरियों की दुकानें देखने लगा। वह एक दुकान से आकर्षित था। जितने हीरे जवाहरात और दुकानों में थे

उन सब को मिलाकर उस एक दुकान में ही थे। उस दुकान का मालिक अपने रत्न मोतियों का एक ढेर लगाकर बैठा था।

ढेर के बीच में एक मोती थी। रङ्ग रङ्ग के मोतियों के ढेर बड़े सुन्दर मालूम होते थे। रत्नवेदी ने उस ढेर को देखकर बूढ़े से पूछा-"आपके पास सब तरह के रत्न तो हैं, पर हीरे क्यों नहीं हैं? उस ढेर पर आपने जो मोती रख रखी है, अगर उसकी जगह हीरा रखा गया तो कितना अच्छा लगेगा।"

"मेरे पास सब तरह के रत्न हैं। तुम चाहे कितना बड़ा, किसी तरह का हीरा लाओ मैं उससे बड़ा, अच्छा तुम्हें दिखाऊँगा।" बूढ़े ने कहा।

"नहीं दिखा सकते। जितना बड़ा हीरा मेरे पास है, उतना बड़ा आपके पास नहीं हो सकता।" रत्नवेदी ने कहा।

"तुम्हारे हीरे की कितनी कीमत है? उसे बाहर रखो। अगर मैं उससे बड़ा हीरा दिखाऊँ तो उसे मुझे



देकर तुम चले जाओ, अगर न दिखाऊँ तो तुम जो कुछ माँगोगे वह मैं तुम्हें मुफ्त दूँगा।" बूढ़े ने कहा।

वे इस तरह बातें कर रहे थे कि और जौहरी व्यापारी भी बहाँ इकट्ठे हो गये।

रत्नवेदी ने इस अभिमान में कि इतने आदमी देख रहे हैं, जेब में से हीरा निकालकर बाहर रखा। बूढ़े ने उसको देखकर कहा-"बेटा, तुम्हारी बात ठीक है। यह हीरा पचास हज़ार मुहरों से अधिक कीमती है। परन्तु इससे बड़ा हीरा मेरे पास है।" उसने अपनी जेब में से हीरा निकाला।

यह वही हीरा था, जो उसने बारह वर्ष की उम्र में जौहरी के पास देखा था। रत्नवेदी बाज़ी हार गया। बूढ़े ने उसका हीरा ले लिया। रत्नों के ढेर में से मोती निकालकर उसकी जगह रत्नवेदी का हीरा रख दिया।

जो लोग जमा हो गये थे, उनमें तरह तरह की बातें हुई। कई ने कहा-"उस छोटे लड़के को बूढ़े ने ठग लिया है।" कई और ने कहा-"पागल है, किसी और को बेचता तो पचास हज़ार मुहरें बाता।" परन्तु रत्नवेदी ने ये सब बातें न सुनीं। वह सिर नीचा करके अपने रास्ते चला गया।

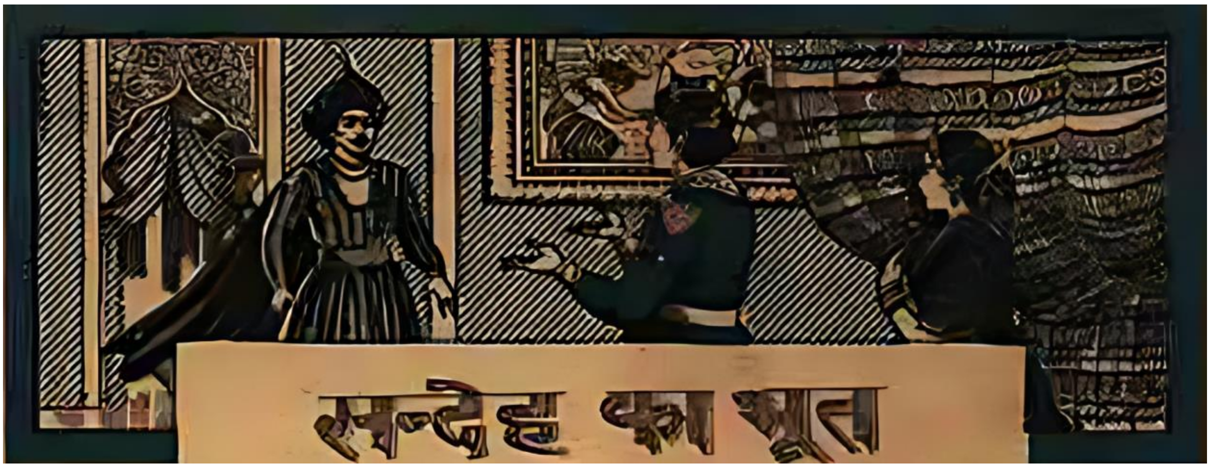
बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा-"राजा! रत्नवेदी फिजूल अपना हीरा यों क्यों खो बैठा? उसने बूढ़े से शर्त क्यों लगाई? बया इसलिए कि बूढ़े से शर्त जीतकर, पचास हज़ार मुहरों के रत्न ले सके या नादानी की वजह से? अगर तुमने इन प्रश्नों का जान बूझकर जवाब न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

"रत्नवेदी नादान भी न था, न लालची ही। वह यही चाहता था कि लोग उसके हीरे के बारे में जाने, और उसकी कीमत आँके। बाजी हार गया था, पर उसकी इच्छा पूरी हुई। हीरे के खोने से उसका नुक्सान जो हुआ उसके बारे में? पहाड़ों में हीरे थे ही, उसे पता था कि वह उन्हें खोज सकता था। इसलिए उस हीरे को खोकर वह बहुत दुःखी न हुआ।" विक्रमार्क ने कहा।

राजा का इस प्रकार मौन भङ्ग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)





सिसली का राजा, लियोन्टिस और बोहीमिया का राजा पोलिक्सिनीस दोनों बचपन के साथी थे। यानि, दोनों छुटपन में एक साथ खेले, एक साथ ही पढ़े, एक साथ सोये। एक ही थाली में वे खाया करते थे। मगर पिताओं के मरने के बाद उन्हें अलग होना पड़ा और वे भिन्न भिन्न देशों के राजा हुये।

लियोन्टिस की पत्नी, हर्मियोन बहुत सुन्दर और पतिव्रता थी। लियोन्टिस को उससे बड़ा प्रेम था। उनके एक लड़का भी था। जिसका नाम मेमीलियस था। उनका अनुकूल दाम्पत्य था। कोई कमी न थी। आराम से जी रहे थे। पर उसे एक ही बात मन में बीन्ध रही थी--वह यह कि बचपन के साथी, पोलिक्सिनीस को वह देख नहीं पाया था। इस कमी को पूरा करने के लिए उसने पोलिक्सिनीस के पास खबर पर खबर भिजवाई कि वह उसके घर दो चार महीने ठहरे।

आखिर पोलिक्सिनीस एक बार सिसली आया। बचपन के साथी बहुत दिनों बाद मिले। लियोन्टिस की खुशी का तो ठिकाना ही न था। पति का पोलिक्सिनीस के प्रति प्रेम देख हर्मियोन ने भी पोलिक्सिनीस के आतिथ्य आदर में कोई कमी न की। कुछ दिनों तक अतिथि सत्कार पाने के बाद पोलिक्सिनीस ने अपने मित्र से विदा लेनी चाही।

"अभी क्या जाओगे! तुम्हें तो आए हुए ऐसा लगता है, दो रोज भी नहीं हुये। चार पाँच सप्ताह के बाद चले जाना।" लियोन्टिस ने कहा।



"नहीं, यह न कहो। मैं फिर एक बार आऊँगा।" पोलिक्जिनीस ने कहा।

लियोन्टिस को बुरा लगा। उसने हर्मियोन से कहा-"हमारा अतिथि अभी जाने के लिये कह रहा है। मैंने बहुत कहा, पर वह सुनता ही नहीं है। तुम ही पूछकर देखो।"

पति की बात मानकर हर्मियोन ने पोलिक्जिनीस से कहा-"सुना है, आपने वापस जाने का निश्चय कर लिया है। अगर आप चले गये तो हमें ऐसा लगेगा जैसे हमारा खजाना चला गया हो। अगर आप चार पाँच सप्ताह हमारे साथ रह सके तो मैं और मेरे पति ऐसा समझेंगे जैसे हमें कोई वरदान मिला हो। हमें दुखी करके जाना भी कोई जाना है।"

पोलिक्जिनीस मित्र की बात को जितनी आसानी से ठुकरा सका था, उतनी आसानी से उसकी पत्नी की बात न ठुकरा सका। उसके इतना कहने पर न ठहरना अशिष्टता थी। वह रहने के लिए मान गया।

तबतक तो लियोन्टिस का हृदय निर्मल था। अब उसके मन में सन्देह पिशाच घर करने लगा। उसने सन्देह किया कि उसकी पत्नी और मित्र एक दूसरे को चाहने लगे थे, इसी वजह से, उसके कहते ही बिना कुछ कहे ठहरने को मान गया।

जब एक बार सन्देह का भूत मनुष्य के दिमाग में घुसता है, तो वह उसे पागल बनाकर छोड़ता है। लियोन्टिस की आँखो को अब सब कुछ सन्देहपूर्ण लगने लगा। सन्देह अब उसके हृदय को जलाने-सा लगा।

यह जलन लियोन्टिस न सह सका। उसने अपने मित्र, केमिलो को बुलाकर कहा-"तुम उस पोलिक्जिनीस को विष

देकर मार दो, जिसने मेरी गृहस्थी में सेँध लगाई है। यह मेरी आज्ञा है।"

केमिलो सब जान गया। वह जानता था कि हर्मियोन पतिव्रता थी और पोलिक्जिनीस पुण्यात्मा था। इसलिये उसने पोलिक्जिनीस को सब कुछ बताकर कहा-"महाराजा, आपका इस देश में रहना ठीक नहीं है। तुरन्त अपने देश चले जाइये। मैंने आपके प्राण बचाये हैं, इसलिये आप मेरे प्राण बचाइये। मुझे भी आप अपने साथ ले जाइये।"

उसी दिन रात को पोलिक्जिनीस बिना किसी को कहे केमिलो को साथ लेकर बोहीमिया के लिए निकल पड़ा।

पोलिविजनीस के भाग जाने से मानों लियोन्टिस को अपने सन्देहों के लिये सबूत मिल गया। उसने गर्भिणी हर्मियोन को कैद में डलवा दिया। अपने माँ बाप में इस आकस्मिक शत्रुता को देखकर, मेमिलियस को इतना दुख हुआ कि उसने चारपाई पकड़ ली। जेल में हर्मियोन ने एक लड़की को जन्म दिया। लियोन्टिस के एक और मित्र अन्टिगोनस की पत्नी, पोलीना ने



रानी के प्रसव में सहायता की। वह अच्छी तरह जानती थी कि हर्मियोन निर्दोष थी।

"राजा की रोज रोज अक्ल बिगड़ रही। कम से कम इस बच्ची को देखकर तो उनका दिमाग सुधरेगा। इस बच्ची को मुझे दीजिये। मैं ले जाकर राजा को दिखाऊँगी।" पोलीना ने हर्मियोन से कहा।

हर्मियोन ने उस बच्ची को अच्छे कपड़े पहनाकर और बहुमूल्य गहने लगाकर राजा के पास भेजा। पोलीना लड़की को ले जाकर दरबार में बैठे लियोन्टिस के पैरों पर रखा और जो कुछ पूछना था, उसने उससे पूछा।

लियोन्टिस का पछताना तो अलग वह और क्रुद्ध हो उठा-"तुम अपनी पत्नी को बाहर भेजो।" उसने अन्टिगोनस को आज्ञा दी।

फिर उसने अन्टिगोनस से कहा- "उस जैसी की गर्भ से पैदा हुई लड़की में क्यों लूँ? इसे कश्ती में ले जाकर किसी द्वीप में छोड़ दो। वह खुद ही मर मरा जायेगी।"

अन्टिगोनस केमिलो की तरह न था। उसने राजाज्ञा में न्याय व अन्याय देखने की कोशिश न की। वह राजकुमारी को कश्ती में रखकर निकला। रास्ते में तुफान आया। बहुत दिनों बाद वे एक किनारे पर लगे। यह बोहीमिया का किनारा था।

अन्टिगोनस उस लड़की को लेकर किनारे पहुँचा। उसको वहाँ कुछ कपड़ों के साथ छोड़, वह वापस जाने लगा। रास्ते में उसे एक भालू ने चीरकर मार दिया।

एक गड़रिये ने कुछ दूरी पर से यह घटना देखी। भालू के जाते ही उसने अन्टिगोनस को, पास जाकर देखा। उसकी जान चली गई थी। वह वहाँ से बच्ची के



पास गया। उस बच्ची को देखते ही उसकी जान में जान आई। यह साफ था कि वह नही किसी बड़े घर की थी। उसके शरीर पर कितने ही कीमती गहने थे। कपड़े थे।

वह रात को उस बच्ची को लेकर घर पहुँचा। उसने अपनी पत्नी से कहा-"भगवान ने हमें निस्सन्तान जान यह सन्तान दी है। इस बच्ची की वजह से हमारी गरीबी भी दूर हो गई है। बच्ची के एक गहने को भी यदि हमने बेचा, तो जिन्दगी आराम से काट लेंगे।"

सवेरे होते ही गड़रिया और उसकी पत्नी, बच्ची को लेकर, दूर गाँव में चले गये। क्योंकि "यह लड़की कौन है? इतना पैसा तुम्हारे पास कैसे आया?" दूसरे गाँव वाले उससे न पूछते। वहाँ उन्होंने बताया कि वह लड़की उनकी ही थी। और उसका नाम पर्डिटा रखा। उसके कुछ कपड़े और गहने बेचकर जो पैसे मिले, उससे वे सुख से गुजारा करने लगे।

उधर सिसली में लियोन्टिस ने अपनी पत्नी की सुनवाई शुरू की। लोग जानते





थे कि इससे अधिक अपमानजनक बात और कोई न हो सकती थी।

सुनवाई के शुरु होने के कुछ देर पहले, न्यायस्थल में भविष्यवाणी हुई। "हर्मियोन निर्दोष है। पोलिक्जिनीस उदार है। केमिलो स्वामिभक्त है। लियोन्टिस सन्देह के भूत के कारण क्रूर हो गया है। जो वह खो बैठा है, अगर वह न पा सका तो उसके कोई वारिस न होंगे।"

यह भविष्यवाणी सुन उपस्थित व्यक्ति हैरान हो गये। परन्तु कियोन्टिस ने परवाह न की। "यह भविष्यवाणी झूठ है। मेरी पत्नी के मित्रों की यह साजिश है ताकि उसको सजा मिले। मेनीलियस के होते मेरे वारिस क्यों नहीं होंगे? मैंने अभी पैदा हुई लड़की ही तो खोई है।" उसने सोचा।

इतने में नौकरों ने आकर कहा- "महाराज! यह जानते ही कि माँ की सुनवाई होने जा रही है, राजकुमार मेमीलियस का हृदय बन्द हो गया और वे मर गये।" अपने लड़के की मृत्यु वार्ता सुनकर हर्मियोन कटे पेड़ की तरह गिर पड़ी। पोलीना उसको दासियों द्वारा उठवाकर अपने घर ले गई और वहाँ उसने उसकी सेवा शुश्रूषा की।

हर्मियोन की सुनवाई तभी खत्म कर दी गई। इकलौते लड़के का मरना और उसकी मृत्यु की खबर सुनकर, हर्मियोन का मूर्छित हो जाना देखकर राजा को पत्नी के सतीत्व पर विश्वास हो गया। भविष्यवाणी ठीक निकली। अन्टिगोनस, जो लड़की ले गया था, वापिस न आया, तो सचमुच उसके कोई वारिस न रहेंगे। यह जिसने मविष्यवाणी की थी, उसीने हर्मियोन को निर्दोष बताया था।

"जो कुछ गुजरा है, मैं उसके लिए हर्मियोन के पैरों पर पड़कर माफी माँगूँगा। अन्टिगोनस के वापस आते ही मैं उसे लड़की फिर लाने के लिए वापिस मेजूँगा।" लियोन्टिस ने सोचा। दोनों ही बातें न हुई। क्योंकि पोलीना ने राजा के पास झूठी खबर भिजवाई कि हर्मियोन मूर्छा में ही मर गई थी। अन्टिगोनस वापस आया ही नहीं।

कई वर्ष बीत गये। बोहीमिया के पास पर्डिटा, गड़रिये के घर पली और बड़ी हो गई। वह गड़रियों की लड़कियों की तरह कपड़े पहनकर, घर के पासवाले चरागाह में अपनी भेड बकरियाँ चराया करती। यद्यपि वह पैदा होते ही गड़रिये के घर बड़ी हुई थी, तो भी उसमें कई खानदानी गुण थे। उसका सौन्दर्य देखते ही बनता था। जितनी वह सुन्दर थी, उतनी ही वह विवेकवती भी थी, मिष्टभाषिणी थी।

एक दिन पोलिक्जिनीस का लड़का फ्लोरिजेल अपने मित्रों के साथ शिकार खेलने गया हुआ था कि उसने भेड़ों को चराते पर्डिटा को देखा और वह उस पर मुग्ध हो



गया। उसने उससे बातें छेड़ी। दो-चार बातें करने के बाद, उसे उस पर प्रेम हो गया। उसके बाद फ्लोरिजेल रोज़ उसके घर जाता। उसने औरों से भी दोस्ती कर ली। परन्तु उसने वहाँ किसी से भी न कहा कि वह राजकुमार था। वह जानता था कि कहने पर न पर्डिटा, न उसके माता-पिता ही उसके साथ हिल-मिलकर रहेंगे।

परन्तु फ्लोरिजेल का रहस्य उसके पिता पोलिक्जिनीस को मालूम हो गया। अपने लड़के को दरबार में हाज़िर होता न देख, उसने नौकरों को उसका पीछा करने के

लिए कहा, उन्होंने वापस आकर कहा कि वह गड़रिये के घर जाता था। और उसकी लड़की बहुत सुन्दर थी। उसी समय गड़रियों का एक त्यौहार आया। उस दिन गड़रिये भेड़ों की ऊन काटकर खुशियाँ मनाते थे। जो कोई आता उसको भोजन खिलाते। उस त्यौहार में फ्लोरिजेल भी शामिल हुआ। उससे कुछ दूर, पीछे किसान के कपड़े पहनकर पोलिक्जिनीस और केमिलो भी आये। उनकी बड़ी बड़ी पगड़ियाँ, दाढ़ी-मूँछे देखकर फ्लोरिजेल ने उन्हें न पहचाना।

पोलिक्जिनीस ने गड़रिये के पास आकर पूछा-"वह सुन्दर लड़की कौन है? उससे लगातार बातचीत करनेवाला लड़का कौन है?"

"हुजूर! वह मेरी लड़की पर्डिटा है। वह लड़का उससे शादी करने के लिए कह रहा है। शादी करेगा तो किस्मतवाला ही है। क्योंकि हमारी लड़की वैसी गरीब नहीं है। उसके पास काफी गहने वगैरह हैं।" गड़रिये ने कहा। ये गहने वही थे जो पर्डिटा की माँ ने उसे पहनाये थे।



पोलिक्जिनीस ने अपने लड़के के पास जाकर कहा-"भाई, तुम उत्सव देखे बगैर इस लड़की से बातचीत किये जा रहे हो, कम से कम इसे चूड़ियाँ तो पहनाओ।" यह सुन फ्लोरिजेल ने कहा-"यह लड़की चूड़ियों पर निहाल होनेवाली नहीं है। मैं उसे सबसे अधिक मूल्य का, अपना हृदय ही दूँगा। हम शादी करने जा रहे हैं।"

पोलिक्जिनीस को बहुत गुस्सा आया। उसने अपनी पगड़ी और नकली दाढ़ी मूँछ निकालकर ड़ाँटा-डपटा-"नीच। तुम इस लड़की से शादी करोगे? या इसे तलाक दोगे? अगर कभी तुम इस तरफ फिर आये तो तुम्हें, इस लड़की को और इसके माता पिता को कठोर दण्ड मिलेगा। तुम युवराजा हो और तुम एक गड़रिये की लड़की से शादी करोगे?" फिर उसने केमिलो की ओर मुड़कर कहा-"इसे जल्दी ही घर ले जाओ!" फिर वह जल्दी जल्दी चला गया।

यह जानते ही कि वह राजा था, और फ्लोरिजेल युवराजा था सब की खुशी काफूर हो गई। कोई कुछ न कह सका।





परन्तु पर्डिटा ने फ्लोरिजेल से कहा-"वे बिना रुके चले गये होते तो पूछती-'हम गड़रिये हैं। इसलिए हमें नीचा दिखाने की कोई जरूरत नहीं है। वही धूप हमारे घर के छत पर पड़ती है, जो उनके महल की छत पर। प्रमुखता गुण की है, न कि कुल की। अफसोस, यह जाने बिना कि तुम युबराज हो, मैंने तुमसे प्रेम किया। हमारा तुम्हारा भला मेल कैसे होगा? तुम जाओ!"

"पर्डिटा! क्या तुमने यह सोचा है कि पिता के गुस्सा करने पर मैं तुमको छोड़ कर चला जाऊँगा? गड़रिये की लड़की ही सही, मैं तुमसे विवाह करके रहूँगा।" फ्लोरीजेल ने कहा।

उसने कह तो दिया, पर यह सम्भव न था। इसलिए समझदार केमिलो ने एक उपाय सोचा। उसने पर्डिटा, उसके माँ-बाप और फ्लोरिजेल को साथ लेकर सिसली जाने की ठानी। वहाँ पर्डिटा और कोरिनेल सुख से विवाह कर सकते थे। यही नहीं, वह बहुत दिनों से अपने राजा को देखने की सोच रहा था। वह बहुत पछता रहा था।

केमिल के सुझाव पर सब सिसली गये। गड़रिया, पर्डिटा के छुटपन के गहने और कपड़े साथ ले गया। उनको देखकर लियोन्टिस जान गया कि पर्डिटा उसकी लड़की थी। वह लड़की जो उसके ख्याल में चली गई थी, बहुत समय बाद मिली। वह मित्र, जिसने उसके हित में पोलिक्जिनीस की हत्या न की थी, उसके पास वापस आ गया था। अब उसे यही चिन्ता सता रही थी कि हर्मियोन भी यदि जीवित होती तो उसके आनन्द में कोई कमी न रहती।

लियोन्टिस को पत्नी की याद में लगातार आँसू बहाता देख पोलीना ने कहा-"महाराज! जो चले गये हैं, वे वापस नहीं आते। पिछले दिनों यहाँ एक कलाकार आया था, मैंने उससे हर्मियोन देवी की एक मूर्ति बनवाई। उस पर रङ्ग भी इस प्रकार लगवाया है ताकि वह वास्तविक मालूम हो। अगर आप उसे देखना चाहें तो सपरिवार मेरे घर पधारिये।"

सब मिलकर पोलीना के घर जाकर यथोचित आसन पर बैठ गये। पोलीना ने एक परदा हटाकर, हर्मियोन को उन्हें दिखाया। यह सोचकर वहाँ खड़ी स्त्री मूर्ति ही थी सबने कलाकार की खूब प्रशंसा की।

"लगता है जैसे हर्मियोन सामने खड़ी हो। मौत के समय उसकी इतनी आयु न थी।" लियोन्टिस ने कहा।

"अगर वे जीवित होतीं तो इस समय कैसी होतीं, यह अनुमान करके ही कलाकार ने यह मूर्ति तैयार की है।" पोलीना ने कहा।

"ऐसा लगता है जैसे वह मूर्ति साँस ले रही हो। पोलीना तेरा भला होगा, मुझे



हर्मियोन को एक बार छूने दो।" लियोन्टिस ने पोलीना को मनाया।

यह देख कि यह बात बहुत देर न चलेगी पोलीना ने कहा-"महाराज, अगर मैं एक मन्त्र जपूँ तो वह मूर्ति यहाँ आकर हमसे बातें करने लगेगी।"

उसके यह कहते ही इर्मियोन नीचे उतर आई। उसने अपने पति और लड़की का आलिङ्गन किया। सब खुशी से आयूँ बहाने लगे।

"आप अन्याय के लिए प्रायश्चित करें, यह सोचकर ही मैंने इनको इतने दिन अपने घर रखा। मुझे क्षमा कीजिये।" पोलीना ने कहा।

"मेरे लिए यह दण्ड ठीक ही है। अभी तक मुझे दण्ड काफी नहीं मिला है। अगर पोलिक्जिनीस आ सके तो कितना अच्छा होगा, मैं उससे भी माफी माँग लूँगा।" लियोन्टिस ने कहा।

अभी वह यह कह ही रहा था कि पोलिक्जिनीस भी वहाँ आ पहुँचा। बात ऐसी हुई कि जब लड़के को लेकर केमिलो वापस

न आया, तो उसने पूछताछ करवाई तो मालूम हुआ कि वे सब देश छोड़कर चले गये थे। यह अनुमान करके कि वे सिसली ही गये होंगे, वह सीधा वहाँ चला आया।

यह जानते ही कि पर्डिटा लियोन्टिस की लड़की थी, उसने अपने लड़के को उससे विवाह करने की अनुमति तुरन्त दे दी। लियोन्टिस पर तो उसका क्रोध तभी चला गया था, इसलिए उसने उसे माफी भी माँगने न दी। उसके बाद पर्डिटा और फ्लोरिजेल का वैभव के साथ विवाह हुआ।





सिद्धार्थ पाँच महीने के थे कि कृषि उत्सव आया। उत्सव के समय बूढ़े, बच्चे सभी खेतों में जाते थे। पहले पहल राजा सोने के हल को पूर्व से पश्चिम की ओर जोतता था। उनके बैलों के सीङ्गों पर सोने की टोपियाँ लगाई जाती थीं। राजा सोने से मढ़ी लकड़ी लेकर बैल हाँका करता।

राजा के बाद कुल के बड़े लोग एक सौ आठ चान्दी के हलों को जोतते, उनके बैलों के सीङ्गों पर चान्दी की टोपियाँ लगाई जातीं। वे चान्दी से जड़ी छड़ी से बैल हाँकते।

उसके बाद मामूली किसान हज़ार हलों से खेत जोत देते। हल चलाने में वे छोड़ करते। जिसकी पंक्ति सीधी होती, और जो अधिक हल चलाता, वह सब से अधिक समर्थ समझा जाता।

इस उत्सव में, कपिलवस्तु की प्रजा, अच्छे अच्छे कपड़े पहनकर सोने चान्दी की झण्डियों, पंखे, कलश, थाल, आदि, लेकर उपस्थित होती। क्योंकि राजकुटुम्ब उत्सव देखने आया था, इसलिए, सौ दासियों के साथ सिद्धार्थ को भी लाया गया। एक पेड़ के नीचे,



चारों तरफ परदे लटकाकर, उसमें बच्चे को रखा गया। फिर दासियाँ उत्सव में इस तरह मग्न हुई कि उस बच्चे को ही बिलकुल भूल गई।

शाम तक उनको बच्चे का ख्याल न आया। जब वे भागी भागी पेड़ के पास गई तो, उन्होंने एक चमत्कार देखा- वह यह कि जब और पेड़ों की छाया पूर्व की ओर पड़ रही थी तो उस पेड़ की छाया ठीक बच्चे पर पड़ रही थी, धूप से उसकी रक्षा कर रही थी। यह चमत्कार देख, दासियों ने महाराजा शुद्धोधन के पास जाकर कहा-"महाराज! आप यह उत्सब क्या देख रहे हैं, इससे भी हज़ारों गुना आश्चर्यजनक चमत्कार आकर देखिये।" उन्हें वे सिद्धार्थ के पास ले गईं। शुद्धोधन ने यह जानकर कि उसका लड़का अवतार पुरुष था, सिद्धार्थ को नमस्कार किया।

उन्होंने उस बच्चे से कहा-"बेटा, ये सब चमत्कार मुझे क्यों दिखाते हो? अगर आज तुम्हारी माँ जीवित होती तो यह देखकर कितनी आनन्दित होती?"

सिद्धार्थ दिन प्रति दिन चन्द्रमा की तरह बढ़ता जाता था। इतने लाड़-प्यार से पाला-पोसा जानेवाला लड़का, एक दिन सन्यास ग्रहण कर लेगा, यह जब जब शुद्धोधन के मन में आता, तो सहसा वे बहुत दुखी हो जाते।

सिद्धार्थ की उम्र तब बारह वर्ष की थी। राजा शुद्धोधन ने कुछ ज्योतिषियों को बुलाकर पूछा-"क्या आप बता सकते हैं कि मेरा लड़का किन कारणों से बैरागी हो जायेगा?"

"महाराज! बार्धक्य, व्याधि, मृत्यु, सन्यासी, इन चारों को देखकर आपका

लड़का बैरागी हो जायेगा।" ज्योतिषियों ने कहा।

"मेरा लड़का कुछ भी हो, सम्राट बनेगा। वह किसी भी हालत में सन्यासी न होगा।" शुद्धोधन ने कहा। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि सिद्धार्थ की नजरों में, बूढ़े, रोगी, शव, सन्यासी आदि आयें ही न।

सिद्धार्थ के लिए तीन महल बनवाये गये। उनके नाम थे, रम्य, सुरम्य, शुभ। एक शरत्कालीन प्रासाद था। दूसरा ग्रीष्मकालीन, और तीसरा वर्षाकालीन था। इन तीनों महलों के चारों ओर लम्बा चौड़ा आहाता था। उनमें कई चौकीदार थे। उनका काम यह था कि वे किसी ऐसे व्यक्ति को अन्दर न आने दें, जिसको, सिद्धार्थ को नहीं देखना चाहिये था। वे बहुत सावधान रहते।

सिद्धार्थ जब सोलह वर्ष का हुआ, तब राजा शुद्धोधन ने उसके विवाह के बारे में सोचा। कपिलवस्तु के राजवंश वाले प्रायः व्याघ्रपुर के राजकुटुम्ब से सम्बन्ध किया करते थे। इसलिए शुद्धोधन ने व्याघ्रपुर के



राजा, सुप्रबुद्ध को खबर भिजवाई कि वे अपनी लड़की यशोधरा का सिद्धार्थ से विवाह करवायें।

सुप्रबुद्ध जानता था कि सिद्धार्थ की जन्मपत्री में सन्यास लिखा था। यह सोचकर कि सिद्धार्थ के सन्यास लेने पर, उसकी लड़की अनाथ हो जायेगी, उसने विवाह में यशोधरा को देने से इनकार कर दिया।

परन्तु यशोधरा ने कहा कि वह सिवाय सिद्धार्थ के किसी और से विवाह न करेगी। बुद्ध के सन्यासी हो जाने पर भी उसको आपत्ति न थी।

शुद्धोधन ने सुप्रबुद्ध के तिरस्कार की परवाह न की। वे स्वयं व्याघ्रपुर गये और साथ यशोधरा को कपिलवस्तु ले आये। उसके बाद शास्त्रोक्त रीति से यशोधरा का सिद्धार्थ से विवाह हुआ और सिद्धार्थ को युवराज भी घोषित किया गया। यशोधरा, सिद्धार्थ की मुख्य रानी थी। इसलिए उसने भी राजसिंहासन पर बैठकर मुकुट पहना। इस सब के बाद, शुद्धोधन महाराजा ने शाक्यों के पास यह खबर भिजवाई-"मेरे लड़के युवराज सिद्धार्थ की उपपत्नी होने के लिए और मुख्य रानी यशोधरा की सहेलियाँ बनने के लिए, अपनी अविवाहित कन्यायें भेजो।"

पर राजबन्धु इसके लिए न माने। उन्होंने कहा-"युवराज बच्चा है। बहुत छोटा है। उसने अभी तक क्षत्रियोचित एक भी विद्या नहीं सीखी है। अगर युद्ध हुआ तो वह शत्रुओं का कैसे सामना कर सकेगा! हमारी लड़कियों का भरण-पोषण कैसे कर सकेगा? हम ऐसे के पास अपनी लड़कियाँ नहीं भेजेंगे।"

मेरे बारे में मेरे कुलवालों ने यह कहा है, यह जानकर सिद्धार्थ को बहुत दुख



हुआ। "जो मेरे शक्ति सामर्थ्य को देखना चाहते हैं, ठीक एक सप्ताह बाद राजमहल में आयें।" यह घोषणा सारे शहर में कर दी गई।

निर्णीत दिन के बाद राजमहल में बहुत बड़ा पण्डाल तैयार किया गया। उनके एक सौ सात हजार बन्धुओं के अतिरिक्त और कई लोग, दास, दासी, उनका अस्त्र नैपुण्य देखने के लिए वहाँ उपस्थित थे। सब के सामने सिद्धार्थ ने एक बाण निकाला। उसको कोई साधारण व्यक्ति उठा भी न पाता था। वैसे बाण को अपने बायें पैर की छोटी अंगुली पर रखकर, एक अंगुली के नाखुन से, जहाँ बैठे थे, वहाँ से बिना उठे, धनुष पर चढ़ाया। प्रत्यञ्चा से जो शब्द हुआ, वह विद्युत की ध्वनि से भी भयङ्कर था। उसकी प्रतिध्वनि से दसों दिशायें गूँज उठा।

फिर सिद्धार्थ ने एक ही बाण से चार केले के पेड़ों को उखाड़ा। आँखों पर पट्टी बाँधकर निशाना बाँधा। बाल से लटकी हुई वस्तु को बाण से तोड़कर नीचे गिरा दिया। उन्होंने सब के सामने यह निरूपित किया कि अष्ट शिल्पों में उन्हें पाण्डित्य था।





सिद्धार्थ के सामर्थ्य से सन्तुष्ट होकर शाक्यों ने अपनी चालीस हज़ार कन्याओं को सिद्धार्थ की उपपत्नी के रूप में और यशोधरा की सहेलियों के रूप में भेजना स्वीकार किया।

सिद्धार्थ के पास सब सुख सामग्री थी। साधन थे, उनके चारों ओर स्वर्ग सा था। विनोद-विलासों में फँसे सिद्धार्थ ने एक दिन अपने सारथी, चेन्ना से कहा-"मैं बाग में जा रहा हूँ। रथ तैयार रखो।"

चेन्ना रथ में चार सफेद घोड़े जोतकर लाया। सिद्धार्थ उसमें चढ़कर बाग की ओर गये। वे राजमहल से कुछ दूर गये थे कि सिद्धार्थ को एक आश्चर्यजनक व्यक्ति दिखाई दिया। वह व्यक्ति झुका हुआ था, और काँपता काँपता चल रहा था। उसके बाल पक चुके थे। मुख में बहुत से दान्त भी न थे।

उसको देखकर सिद्धार्थ ने चेन्ना से पूछा-"यह क्या है, वह आदमी ऐसा क्यों है?"

"वह बूढ़ा है।" चेन्ना ने जवाब दिया।

"वह औरों की तरह न पैदा होकर, बूढ़ा होकर क्यों जन्मा?" सिद्धार्थ ने पूछा । वह यह भी न जानते थे कि बुढ़ापा क्या चीज़ है।

चेन्ना ने हँसकर कहा-"वह बूढ़ा नहीं पैदा हुआ। एक समय था, वह भी जब हमारी तरह जवान था। बुढ़ापा आने पर वह ऐसा हो गया।"

"क्या इस प्रकार के लोग इस दुनिया में बहुत हैं?" सिद्धार्थ ने जानना चाहा।

"क्यों नहीं हैं महाराज! बहुत-से हैं।" चेन्ना ने कहा।

सिद्धार्थ ने कुछ सोचकर कहा- "क्या मैं भी, जब बूढ़ा हो जाऊँगा, इसी तरह काँपता काँपता चलूँगा?"

"जीते जीते हर किसी को बुढ़ापा आता ही है।" चेन्ना ने कहा।

"बाग मत जाओ। रथ को वापिस करो।" सिद्धार्थ ने कहा। क्या इस जीवन का शेष वार्धक्य ही है? किसलिए है? यह व्यर्थ जीवन क्यों?" सिद्धार्थ मन ही मन सोचने लगे।



अपने लड़के को इतनी जल्दी राजमहल में वापस आया देख, राजा शुद्धोधन ने कारण जानकर बताने के लिए कहा। जब उन्हें मालूम हुआ कि सिद्धार्थ रास्ते में किसी बूढ़े को जाता देखकर चिन्तित होकर चले आये थे तो उन्हें बहुत दुख हुआ। उन्होंने सिद्धार्थ का मनोरञ्जन करने के लिए नृत्य, गान, आदि की व्यवस्था की। और राजमहल के पहरेदारों की संख्या भी दुगनी कर दी।

चार महीने बीत गये। फिर एक दिन, सिद्धार्थ अपने रथ में बाग के लिए निकले। इस बार रास्ते में एक रोगी दिखाई दिया।

उसको देखते ही सिद्धार्थ काँप उठे। "वह आदमी वैसा क्यों हैं?" उन्होंने चेन्ना से पूछा। चेन्ना ने बताया कि वह किसी भयङ्कर रोग से पीड़ित था। "प्राणियों के लिए रोगी होजाना स्वाभाविक है। क्या यही जीवन है? इस प्रकार के जीवन की क्यों इच्छा रखी जाय?" यह सोच सिद्धार्थ ने रथ को फिर घर लौटाने के लिए कहा।

जब शुद्धोधन को इस बार यह मालूम हुआ कि उनका लड़का एक रोगी को देखकर वापस चला आया था, तो उनकी

चिन्ता और भी बढ़ गई। उन्होंने हर तरह से कोशिश की कि इस प्रकार के दृश्य सिद्धार्थ की आँखों में न पड़े।

परन्तु सिद्धार्थ ने फिर चार महीने के बाद एक शव को देखा। उससे पहले मौत क्या चीज़ होती है, वे न जानते थे। चेन्ना ने उनसे कहा-"हर कोई जो पैदा होता है, इसी तरह मरता है।"

इस बार भी सिद्धार्थ ने रथ को घर वापस लौटाया। ज्योतिषियों की बात ठीक निकल रही थी। शुद्धोधन उसे रोक न पा रहे थे।

फिर चार महीने बीते। आषाढ़ पूर्णिमा का दिन आया। यशोधरा पूर्ण गर्भिणी थी। कमी भी प्रसव हो सकता था। सिद्धार्थ ने पहले की तरह चेन्ना को रथ लाने के लिए कहा, और उस पर सवार होकर वे बाग की ओर गये। रास्ते में उनको एक सन्यासी दिखाई दिया। उस सन्यासी ने सिर घुटवा रखा था। गेरुआ पहने हुए था। सिर नीचे किये सामने के दो चार गज स्थल को देखता हुआ चला जा रहा था। उसका मुँह देखते ही सिद्धार्थ को लगा कि उसके मन में कोई राग-द्वेष व विकार न था।

"चेन्ना, यह कौन है? यह औरों की तरह नहीं है न?" उन्होंने अपने सारथी से पूछा।

"यह सन्यासी है। यह इहलौकिक सुखों को छोड़कर जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होने की इच्छा रखनेवाला है।" चेन्ना ने कहा।

सिद्धार्थ का मन यकायक हल्का-सा हो गया। उसने चेन्ना से कहा-"रथ को बाग की ओर ले जाओ।"

(अभी और है)





बुद्ध चरित्र